पत्रिका

काव्यांजलि...

जिनके मायके नहीं होते

नीलकमल सैनी

कितनी खुशकिस्मत होती
होंगी वो लड़कियां.....
जिनके अपने
मायके होते हैं....
जहां जाते ही सारी यादें ,
बचपन के वही पुराने
जायके होते हैं...
जहां करता है तुम्हारा कोई
हर साल इंतजार
कि कब आओगी....
कब दिल की
सारी बातें बताकर
अपने तन और मन की
थकान मिटाओगी.....
देखो ये गलियां
तुम्हारी राह तकती हैं...
आज भी तुम्हारी यादें,बातें
घर के कोने-कोने में
धड़कती हैं...
जहां हैं ऐसे अपने
जो सिर्फ सुनेंगे नहीं....
सच में...हां, हां
बिल्कुल सच में
समझेंगे तुम्हारे जज्बात
जहां ना बात-बात में देनी
पड़ेगी तुम्हे कोई सफाई
यहां हैं बुआ,
परदादा,परदादी,चाचा,चाची,
पापा और
सबसे प्यारी माई....
कुछ घर सिर्फ घर नहीं होते
पूरा युग होते हैं...
जो कैद कर लेते हैं
आपकी आत्मा
और फिर कभी आजाद
नहीं करते उसे
चाहे आप दुनिया के किसी
कोने में चले जाएं
या पता नहीं?
आप आजाद होना नहीं चाहते
कुछ आकृतियां
जहन में ऐसी जज्ब
हो चुकी हैं कि
उन्हें विस्मृत कर पाना
कम से कम इस जन्म में
तो असंभव है।

कहानी...

अंतिम पापा को याद कर रही थी। पापा का श्राद्ध कर रही थी। उसके मन में एक शांति शांति। बहुत सी बेटियां हैं जो आज भी समाज में अंतिम हैं। आशा है, नया बदलाव आएग

अंतिम

अनीशा चौधरी
@patrika.com

आज पापा का पहला श्राद्ध था। अंतिम ने सब तैयारी कर ली थी। बस वो सोच रही थी, कि पंडित जी आ जाए तो वो अपनी सब बहनों और भाई रोशन को वीडियो कॉल पर कनेक्ट कर लेगी। अंतिम ने इस हक को पाने के लिए कितना सहा ये सिर्फ अंतिम ही जानती थी। अंतिम मोहन जी की पांचवी बेटी थी। मोहन जी बेटे के मोह में चार बेटियां पैदा कर चुके थे। उन्होंने बेटा होने के लिए सारे टोने टोटके कर लिए थे। फिर भी उनके बेटे की इच्छा पूर्ण ना हो पाई। ना जाने कितने व्रत उपवास और मंदिरों की सीढ़ियां चढ़ने के बाद भी अंतिम ही पैदा हुई। मोहन जी थक गए थे बेटियों का चेहरा देख-देख कर इसीलिए पांचवी बेटी को उन्होंने अंतिम नाम दिया। अंतिम के दो साल बाद ही मोहन जी के घर में बेटे का जन्म हुआ।

मोहन जी की खुशी का कोई ठिकाना न था। उन्हें लगा अंतिम उनके लिए बहुत शुभ रही जो अपने साथ अपना भाई लेकर आई। बेटियों के प्रति मोहन जी की सोच हमेशा संकुचित ही रही। अपनी बड़ी चारों बेटियों को उन्होंने सरकारी स्कूल में केवल नाम मात्र की शिक्षा दिलाई और समय रहते ही उन सब का विवाह करके उनकी जिम्मेदारियां से मुक्त हो गए। रोशन को अच्छे कॉन्वेंट स्कूल में पढ़ाया। क्योंकि किसी पंडित ने उन्हें बताया था कि अंतिम के रोशन के साथ रहने से रोशन के सब संकट दूर हो जाएंगे। इसलिए अंतिम को वो सब सुविधा मिल पाई जो सिर्फ रोशन के लिए थी। पर रोशन जितना प्यार और सम्मान अंतिम को कभी ना मिला। यह विडंबना भारत में अभी भी बहुत बेटियों की है।

अंतिम जब थोड़ी समझदार हुई तब उसने पिता से सवाल भी किया, 'पापा हम सब आपकी ही संताने हैं, फिर रोशन और हममें इतना फर्क क्यों?' तब मोहन जी ने गर्व से उसे बताया कि बेटा होना कितनी बड़ी बात होती है। 'बेटे बुढ़ापे का सहारा होते हैं। मां-बाप की चिता को अग्नि देने वाले होते हैं। उनके बाद उनके वंश को जिंदा रखने वाले और उनकी मृत्यु के पश्चात उनका श्राद्ध बेटे के हाथ से ही होता है।' अंतिम सोचती रही बेटा या बेटी ही क्यों मां-बाप के लिए तो दोनों संताने ही प्रिय होनी चाहिए।

घर की अंतिम स्कूल कॉलेज में हमेशा प्रथम रही। कुछ समय बाद अंतिम को कॉलेज में प्रोफेसर की नौकरी मिल गई। रोशन पढ़ने के लिए विदेश जाना चाहता था। तो पिताजी ने उसे वहां भेज दिया। जाना तो अंतिम भी चाहती थी । फिर अंतिम क कि बाकी बहनों की अपेक्षा कुछ ज्यादा ही मिला है। कुछ बाद रोशन को विदेश में अच्छ मिल गई ।

मोहन जी के लिए इकलौते खुशी और सुविधाएं सर्वप्रथम उन्होंने बेटे को वहीं रुकने क दिया। अंतिम ने कहा भी, 'पापा तो बेटे की इतनी चाह थी। पि खुद से दूर क्यों रहने दिया, अब बुढ़ापे का सहारा कौन बनेगा?'

अंतिम ने कह तो दिया पर क जाने कितने समय से बीमार पापा के बुढ़ापे का सहारा बनी अंतिम ने एक अच्छी संतान क